आचार्य श्री विरागसागर जी की आरती

हे गुरुवर तेरे चरणों में हम वंदन करने आये हैं।
हम वंदन करने आये हैं हम आरति करने आये हैं॥

तुम काम, क्रोध, मद, लोभ, छोड़ निज आतम को पहिचाना है।
घर कुटुम्ब छोड़कर निकल पड़े, धर लिया दिगम्बर बाना है॥

छोटी सी आयु में स्वामी, विषयों से मन अकुलाया है।
तप, संयम, शील, साधना में दृढ़ अपने मन को पाया है॥

कितना भीषण संताप पड़े, हो क्षुधा तृषा की बाधायें।
स्थिर मन से सब सहते हो, बाधायें कितनी आ जाये॥

नहीं ब्याह किया घर बार तजा, समता के दीप जलाये हैं।
हे महाव्रती संयमधारी, चरणों में सेवक आये हैं॥

तुम जैन धर्म के सूरज हो, तप त्याग की अद्भुत मूरत हो।
है धन्य धन्य महिमा तेरी, तम हरने वाले सूरज हो॥

शिवपुर पथ के अनुगामी का अभिवंदन करने आये हैं।

सुलभाः पुरुषा लोके सततं प्रियवादिनः।
अतप्रियस्यच पश्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः।।

अर्थ—इस दुनिया में मीठी-मीठी बातें बनाने वाले बहुत पाये जाते हैं पर कड़वी और हितकर वाणी के कहने तथा सुनने वाले दोनों ही दुर्लभ हैं